सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल।। ९८ ।।

हमारे धनी की साहेबी अखण्ड है। अपने श्री राजजी महाराज के सुख अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज से इतना सुख जो अपने को मिलता है वह अनादि और अखण्ड है।

बड़ी बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरक सदा बेसक।
और सब याके खेलौने, सब पर एकै हक।। ९९ ।।

अपने श्री राजजी महाराज की साहेबी की महिमा अति भारी है और सब इनके खिलौने हैं। सबके मालिक एक श्री राजजी महाराज ही हैं।

महामत साहेबी हककी, मैं खसम अंगका नूर।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर।। १०० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के अंग श्यामा महारानी हैं और श्यामा महारानी के अंग हम सब रूहें हैं। इस तरह सब परमधाम में एक वाहेदत है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १४३७ ।।

तीनों सरूपों की पेहेचान बल अर्स की तरफ का

पेहेले किया बरनन अर्स का, रूह अल्ला का केहेल।
अब चितवन सें केहेत हों, जो देत साहेदी अकल।। १ ।।

अब तक परमधाम का जो वर्णन किया है वह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के कहे के अनुसार किया है। अब अपनी जागृत बुद्धि की अक्ल से चितवन करके बयान करती हूं।

जब जानों करूं बरनन, तब ऐसा आवत दिल।
जब रूह साहेदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल।। २ ।।

जब मैं वर्णन करने लगती हूं तो दिल में ऐसा आता है जैसी मेरी आत्मा गवाही देती है कि वैसा वहां परमधाम में होना चाहिए।

इन विध हुआ है अव्वल, दई रूह साहेदी तेहेकीक।
जो कही बानी जोस में, सो साहेब दई तौफीक।। ३ ।।

अब तक जो मैंने कहा है, उसकी मेरी आत्मा ने भी गवाही दी है। जो वाणी मैं अब कहती हूं, वह सब श्री राजजी महाराज के जोश से कहती हूं।

हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे।
सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए।। ४ ।।

जिस वाणी की मुझे जिस समय आवश्यकता होती थी श्री राजजी महाराज मेहर कर वही वाणी जोश से मुझे देते थे और जो मेरी आत्मा गवाही देती थी वही चौपाइयां उतरती गईं।

Nijanand App

सब्द जो सारे इन विध, कही आगे से आखिरत।
बिना फुरमान देखें कहे, ना हादिएं कही हकीकत।।५।।

श्री राजजी महाराज की वाणी जो इस तरह से प्राप्त हुई, उसमें आदि से अन्त तक की, अर्थात् परमधाम से आकर वापस जाने तक की हकीकत है। इस बात को श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने नहीं कहा। कुरान को बिना पढ़े ही सारी हकीकत मैंने कही है।

कहें सब्द रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक।
मुसाफ देखे भागी सक, सब आयतें इसी माफक।।६।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज की कही हुई वाणी पर मेरे दिल में कुछ संशय था, वह संशय कुरान को देखकर दूर हो गया। अब यह सब चौपाइयां उसी के अनुसार हैं।

और फुरमान में ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक।
आवसी मेरी उमत में, करने कायम दीन हक।।७।।

कुरान में रसूल साहब ने लिखा है कि आखिरत में इमाम मेंहदी आकर मेरे अनुसार ही वाणी बोलेंगे। वह इमाम मेंहदी साहब मेरे नाजी फिरके में आएंगे और एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) कायम करेंगे।

सोई सुध दई फुरमानें, सोई ईसे दई खबर।
मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर।।८।।

इसी बात की गवाही कुरान से मिली और यही बात ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने बताई। वही बातें मेरी जबान से जाहिर करवाईं, इसलिए बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतें एक हो गईं।

रूहअल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम।
सब सुध भई अर्स की, रूहें बड़ी रूह खसम।।९।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कृपा करके तारतम ज्ञान दिया। जिससे परमधाम, श्री राजजी, श्यामा महारानी और रूहों की सब खबर मिली।

सब काम भए उमत के, देखें हक फुरमान।
सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत तीनों पेहेचान।।१०।।

अब ब्रह्मसृष्टि की सब चाहनाएं पूरी होंगी, ऐसा मैंने कुरान से पाया। ऐसा ही श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान ने बताया। अब इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने भी इन तीनों (बसरी, मलकी और हकी इमाम मेंहदी) की सूरत को पहचान कर उनकी नसीहत को ग्रहण किया।

अब जो केहेती हों अर्स की, सो दिल में यों आवत।
बिना देखे केहेत हों, जित रूह जो चाहत।।११।।

अब जो मैं परमधाम की हकीकत का बयान करती हूं। वह जो मेरी आत्मा को अनुभव होता है, बिना देखे ही कहती हूं कि यह वस्तु यहां होनी चाहिए, क्योंकि श्री राजजी महाराज अन्दर विराजमान हैं।

अर्स के बरनन की, कही हादियों इसारत।
सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूं सिफत।।१२।।

परमधाम की हकीकत की रसूल साहब और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो बातें इशारतों में कही हैं, उन दोनों की गवाही लेकर परमधाम की सिफत का वर्णन करती हूं।

Nijanand App

मेरी बानी जुदी तो पड़े, जो वतन दूसरा होए।
कहे हादी बल माफक, उरे सिफत सब कोए।। १३ ।।

मेरी वाणी इन दोनों से अलग तब होती जब परमधाम दूसरा होता। रसूल साहब और श्री देवचन्द्रजी ने अपनी शक्ति के अनुसार परमधाम का वर्णन तो किया और उन दोनों ने जाहिरी ज्ञान तो दिया, पर हकीकत और मारफत नहीं खोल सके।

बेसुमार बुजरकी अर्स की, नेक कहूं अकल माफक।
ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अर्स है हक।। १४ ।।

परमधाम की महिमा बेशुमार है। मैं अपनी अक्ल के अनुसार थोड़ा सा वर्णन करती हूं। श्री राजजी महाराज के परमधाम की बेशुमार शोभा रूहें अच्छी प्रकार जानती हैं।

ए सुख न आवे जुबां मिने, तो भी केहेना अर्स बन सुख।
रूहें बैठत उठत सुख सनेह सो, कई गिरो को देत श्रीमुख।। १५ ।।

इन सुखों का वर्णन संसार की जबान से सम्भव नहीं है। फिर भी परमधाम के वनों के सुख रूहों के उठने-बैठने और प्यार करने के सुख जो श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) अपने मुख से कहते थे, वह मैं कहती हूं।

धनिएं आगूं अर्स के, कहे तीन चबूतर।
दाहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर।। १६ ।।

मुझे धनी श्री देवचन्द्रजी ने रंग महल के सामने तीन चबूतरे बतलाए। नीचे चांदनी चौक में एक हरे वृक्ष वाला चबूतरा और मुख्य द्वार के दाएं व बाएं यह तीन चबूतरे बताए थे।

चौथी तरफ नाहीं कह्या, सो मेरी परीछा लेन।
जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन।। १७ ।।

चौथी तरफ के चबूतरे का जिस पर लाल वृक्ष है उसको मेरी परीक्षा लेने के लिए नहीं बताया था। यह समझकर कि मेरे तारतम ज्ञान से रूहें अपने आप ही हकीकत का बयान करेंगी।

ना तो ए लड़का सो भी जानहीं, जो कछू कर देखे सहूर।
एक तरफ क्यों होवहीं, आगूं अर्स तजल्ला नूर।। १८ ।।

नहीं तो एक नासमझ बालक भी जिसने तारतम ज्ञान ले लिया हो, वह भी विचार करके देखे तो कह देगा कि परमधाम के आगे चांदनी चौक में एक तरफ की शोभा अधूरी है। दोनों तरफ होना चाहिए।

खूब देखाई क्यों देवहीं, चबूतरा एक तरफ।
जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ।। १९ ।।

चांदनी चौक में एक तरफ के चबूतरे की शोभा कैसे अच्छी लगेगी? उन्होंने समझा था कि अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान की ताकत से मैं दूसरी तरफ के चबूतरे का बयान कर दूंगी।

तले चौथा चाहिए, आगूं अर्स द्वार।
दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार।। २० ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में दूसरा चबूतरा अवश्य होना चाहिए। दोनों चबूतरों के ऊपर दो वृक्षों की शोभा ही सुन्दर लगेगी।

Nijanand App

आगूं इन चबूतरों, खेलावत जानवर।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर।। २१ ।।

इन चबूतरों के आगे पशु-पक्षी और जानवर आपस में एक-दूसरे से खेल खिलाते हैं तथा अनेक तरह की कलाएं दिखाकर नए-नए तरीके से सुख देते हैं।

आगूं इन दरबार के, दायम विलास है बन।
कई विध खेल करें जानवर, हक हंसावें रूहन।। २२ ।।

रंग महल के सामने वृक्षों के अखण्ड आनन्द हैं। यहां पर जानवर कई तरह के खेल करके श्री राजजी श्यामाजी और रूहों को हंसाते हैं।

इन चौक खुली जो चांदनी, आगूं बड़े दरबार।
उज्जल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार।। २३ ।।

चांदनी चौक के आगे बड़े दरबार (रंग महल) के सामने की रेती की झलकार आसमान तक होती है। इसकी ज्योति बेशुमार है।

जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखून।
आकास जिमी बीच जोत को, इनको नहीं निमून।। २४ ।।

चांदनी चौक के इन दोनों चौरस चबूतरों पर वृक्ष थंभ के समान चौरस छाया करते हैं। जिनकी शोभा की तरंगें आसमान तक जाती हैं। आकाश और जमीन के बीच में इनके जैसा दूसरा कोई नमूना नहीं है।

और जोत जो बिरिख की, सो भी बीच आकास और बन।
पार नहीं इन जोत की, पर एह रंग और रोसन।। २५ ।।

चांदनी चौक के सामने जो और वृक्ष आए हैं उनकी ज्योति आकाश और वनों में बेशुमार है, परन्तु इन लाल और हरे रंग के वृक्षों की ज्योति कुछ अलग ही तरह की है।

जेता कोई रंग बन में, तिन रंग रंग हर हार।
इन विध आगूं अर्स के, बन पोहोंच्या जोए किनार।। २६ ।।

वन में जितने भी रंग हैं उनकी अलग-अलग हारें (कतारें) दिखाई देती हैं। इस तरह से रंग महल के आगे के वृक्ष जमुनाजी के किनारे तक जाते हैं।

कहूं हारें कहूं चौक गुल, कहूं नकस कटाव।
जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जड़ाव।। २७ ।।

कहीं-कहीं वृक्षों की हारें हैं, कहीं चौक हैं, कई फूलों के गुलदस्ते हैं, कहीं-कहीं नक्शकारी है। जैसे चन्द्रमा में जड़ाव जड़ा हो ऐसी शोभा देती हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से करना सम्भव नहीं है।

ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें।
अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहें।। २८ ।।

यह शोभा देखने योग्य है। कहनी में नहीं आती न अक्ल में ही आती है, तो इसका शब्दों में कैसे बयान करूं?

Nijanand App

चारों तरफों बन में, कई जिनसें कई जुगत।
नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, बन में केती कहूं विगत।। २९ ।।

वन में चारों तरफ कई तरह के वृक्षों से अलग-अलग युक्ति बनी है और नई-नई भांति के चन्द्रवा दिखाई देते हैं। ऐसे वन में कई तरह की शोभा है।

चारों तरफों अर्स के, कई बैठक चौक चबूतर।
जुदे जुदे कई विध के, ए नेक कहूं दिल धर।। ३० ।।

रंग महल के चारों तरफ कई प्रकार की बैठकें, चौक और चबूतरे हैं। यह कई तरह के बने हैं। इनका थोड़ा-सा बयान अपनी आत्मा से करती हूं।

सात घाट आगूं अर्स के, ए है बड़ो विस्तार।
नेक कहूं हिंडोले चौकियां, फेर कहूं आगूं अर्स द्वार।। ३१ ।।

रंग महल के सामने सात घाटों का बड़ा विस्तार है। थोड़ा सा हिंडोलों और चौकियों का बयान करती हूं। इसके बाद रंग महल के दरवाजे के आगे का बयान करूंगी।

बट पीपल चारों चौकियां, ऊपर छातें भी चार।
अंबराए बिरिख अनेक बन, निहायत रोसन झलकार।। ३२ ।।

बट-पीपल की चौकी के ऊपर चार छतें है। आकाश में बड़े वन के वृक्षों की अत्यन्त रोशनी झलक रही है।

चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार।
तले चेहेबच्चे नेहेरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार।। ३३ ।।

बड़े वन के वृक्ष चारों तरफ घेरकर आए हैं जिनकी अत्यन्त शोभा है। रंग महल के नीचे पश्चिम दिशा में नूरबाग में चहबच्चे में नहरें चलती हैं। जबान से इनकी महिमा कही नहीं जाती।

याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात।
ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात।। ३४ ।।

बड़े वन के वृक्ष लाल चबूतरे को लगे हुए हैं और इस वन की मोहोलात की बड़ी खूबी है। यह यहां की जबान से कही नहीं जाती।

एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार।
बीच बीच सिंघासन हक का, ए सोभा अति अपार।। ३५ ।।

लाल चबूतरे के प्रत्येक हांस में बारह हजार रूहें बैठती हैं और उनके बीच श्री राजश्यामाजी का सिंहासन अत्यन्त शोभा देता है।

ए बन हांस पचास लो, सेत हरे पीले लाल।
ए बन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल।। ३६ ।।

रंग महल की पच्छिम दिशा में पचास हांस तक सफेद, हरे, पीले, लाल वृक्षों की खूबी देखकर मेरी रूह अति प्रसन्न होती है।

Nijanand App

जित बन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर।
नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ़ और।। ३७ ।।

जिस जगह पर वन की जैसी शोभा चाहिए वहां वैसी ही बनी है। इन वनों में बेल और फूलों की नक्शकारी है और जरा भी घट या बढ़ शोभा नहीं है।

एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत।
ए ठौर रूह से न छूटहीं, जानों कहां देखूं मैं अंत।। ३८ ।।

ऐसे फूलबाग के वृक्षों को देखकर महान सुख मिलता है। रूह के चित्त से यह ठिकाना नहीं छूटता। लगता है कि ऐसी सुन्दर शोभा और कहां देखने को मिलेगी?

तले जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छात।
चारों चौक देखे आगूं चल के, ए सुख रूहें जाने बात।। ३९ ।।

बट-पीपल की चौकी के नीचे की शोभा, चार-चार चौक की चौदह हारें देखकर तथा चारों छतों के सुख को रूहें ही जानती हैं।

तले बन निकुन्ज जो, तिन पर ए मोहोलात।
मिल गए मोहोल अर्स के, रूहें दौड़त आवत जात।। ४० ।।

बट-पीपल की चौकी की प्रथम भोम (मंजिल) में जो मोहोलात बने हैं उन पेड़ों की डालियां रंग महल के दक्षिण वाले झरोखों से आकर लगती हैं। जहां से रूहें रंग महल से दौड़कर आती-जाती हैं।

ज्यों ऊपर हिंडोले अर्स के, भोम सातमी आठमी जे।
जब इन बन हिंडोलों बैठिए, देखिए बड़ी खुसाली ए।। ४१ ।।

रंग महल के ऊपर जैसे सातवीं और आठवीं भोम में हिंडोले हैं वैसे ही हिंडोले बट-पीपल की चौकी में हैं, जिनमें बैठकर बड़ा आनन्द आता है।

जैसे हिंडोले अर्स के, ऐसे ही हिंडोले बन।
रूहें बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन।। ४२ ।।

रंग महल के जैसे हिंडोले हैं वैसे ही चौकी के हिंडोले हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठकर झूलती हैं। उस समय की शोभा बहुत अच्छी है।

इन बन में जो हिंडोले, छप्पर—खटों की जिनस।
सांकरें जंजीरां झनझनें, जानों सबथें एह सरस।। ४३ ।।

इस चौकी के हिंडोले खट छप्पर की तरह है जिनमें एक से एक अच्छी सांकलें, जंजीरें और घुंघरू लगे हैं।

इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तरफों इत।
बट घाट निकुन्ज ले, इन हद से आगूं चलत।। ४४ ।।

इस चौकी के आगे नारंगी का घाट है जो बट-पीपल की चौकी की दूसरी तरफ से आकर लगा है। आगे बट का घाट है और उसके आगे कुंज-निकुंज के बगीचे चलते हैं।

Nijanand App

तरफ बांईं सोभा ताल कीं, बीच चांदनी चारों घाट।
जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट।। ४५ ।।

बट-पीपल की चौकी के बाईं तरफ देखने से हौज कौसर के तालाब की शोभा है। जहां पर ताल के ऊपर चार घाट और बीच में टापू महल की चांदनी सुन्दर शोभा देती है। हौज कौसर तालाब का जल, पाल के वृक्ष, पाल की मोहोलात की शोभा बड़ी सुन्दर है।

कई मोहोल मानिक बन पहाड़ के, कई नेहेरें मोहोल बन।
मोहोल पहाड़ कई सागरों, फेर आए दूब बन अंन।। ४६ ।।

यहां से आगे चलकर मानिक पहाड़ के महल, वन की नहरें और नहरों के अन्दर वन महल और पहाड़ के समान बड़ी रांग की हवेलियां और सागरों को देखकर रंग महल के पीछे दूब दुलीचा और अन्न वन में आए।

अतंत सोभा इन बन की, ए जो आए मिल्या फूलबाग।
फूलबाग हिंडोले ए बन, तूं देख खूबी कछू जाग।। ४७ ।।

इस अन्न वन की शोभा अधिक है और यह फूलबाग से आकर मिलता है। अन्न वन के अन्दर पांच बड़े वन के वृक्ष आए हैं। जिनके सुन्दर हिंडोलों की खूबी देखने योग्य है। हे मेरी आत्मा! तू जागकर शोभा देख।

चौकी हांस पचास लो, फूलबाग हद जित।
और पचास हांस फूलबाग, बड़े चेहेबच्चे पोहोंचत।। ४८ ।।

बट-पीपल की चौकी पचास हांस लम्बी है और फूलबाग की सीमा से लगी है। फूलबाग भी पचास हांस में रंग महल के पीछे फैला है। इन दोनों के बीच में सोलह हांस का चहबच्चा है।

ए बड़ा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत।
बड़ी कारंज पानी पूरन, कई नेहेरें चलत।। ४९ ।।

बड़ा चहबच्चा बाहर की तरफ एक हांस की चौड़ाई में चौकी को तथा एक हांस फूलबाग को लगता है। इस चहबच्चे से बड़ी धारा में पानी कई नहरों में चला जाता है।

ए फूलबाग चौड़ा चबूतरा, निपट बड़ा निहायत।
फूलबाग बगीचे चेहेबच्चे, बिस्तार बड़ो है इत।। ५० ।।

फूलबाग का चबूतरा चौरस है और बड़ा है। फूलबाग के चहबच्चों का विस्तार भारी है (जो चार हजार बारह हैं)।

मोहोल झरोखे अर्स के, फूलबाग के ऊपर।
जोत झरोखे अर्स के, ए नूर कहूं क्यों कर।। ५१ ।।

रंग महल के (१५००) झरोखे फूलबाग के ऊपर आते हैं। उनकी ज्योति की शोभा कैसे बताऊं?

जहां लग हद फूलबाग की, ए जिमी जोत अपार।
ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहें सुमार।। ५२ ।।

जहां तक फूलबाग की सीमा है वहां की जमीन की बहुत सुन्दर ज्योति है। जिसकी सुन्दरता इस जबान के वर्णन से बाहर है, क्योंकि यह बेशुमार है।

Nijanand App

इत दिवाल तले दस खिड़कियां, जित रूहें आवें जांए।
ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें।।५३ ।।

रंग महल के मन्दिर की पहली हार में से नूरबाग में नीचे उतरने के लिए दस खिड़कियां हैं। यहां से रूहें आती जाती हैं। इस खूबी को रूह से विचार कर देखो, तब नजर में आती है।

इन आगूं लाल चबूतरा, ले चल्या अर्स दिवाल।
खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल।।५४ ।।

इससे आगे उत्तर की दिशा में रंग महल से लगता हुआ लाल चबूतरा है जो बारह सौ मन्दिर लम्बा तीस मन्दिर चौड़ा है। इसमें चालीस हांस में चालीस बैठकें बनी हैं और सामने बड़े वन की छाया है।

ए जो भोम चबूतरा, बन आगूं बिराजत।
इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत।।५५ ।।

इस चबूतरे के आगे जो बड़ा वन है। उसमें कई तरह के जानवर श्री राजश्यामाजी तथा रूहों को प्रसन्न करने के लिए तरह-तरह के खेल करते हैं।

ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब।
एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब।।५६ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर बारह सौ मन्दिर में झरोखों की जगह पर मेहराब हैं। जिनकी सुन्दरता बेशुमार है।

बड़ी बैठक इन चबूतरे, अति खूबी तिन पर।
इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर।।५७ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर श्री राजश्यामाजी तथा रूहों की बैठकों की बड़ी शोभा है। यहां सामने जब बड़े-बड़े जानवर खेल करते हैं तो बहुत खुशहाली का अनुभव होता है।

एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए।
एक पीछल जो छोड़िया, आगूं दूजी भोम का सोए।।५८ ।।

लाल चबूतरे के पच्छिम दिशा में चहबच्चा है और पूरब दिशा में दूसरी भोम पर खुलने वाला खड़ोकली का चहबच्चा है। चबूतरे के किनारे पर कठेड़ा है, जहां से झांक कर देखते हैं।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन।।५९ ।।

पूरब की दिशा में खड़ोकली के चहबच्चे की तीन तरफ ताड़वन के वृक्षों ने छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए।।६० ।।

खड़ोकली के सामने रंग महल के मन्दिरों में जो जल के सामने आते हैं, उनमें झरोखे बने हैं, इसलिए इस खड़ोकली के चहबच्चे की सिफत कहने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियल।
और नाम केते लेऊं, बट पीपल सर ऊमर।।६१ ।।

यहां कई वृक्ष ताड़ के, कई खजूर के, कई नारियल के, कई बट, कई पीपल के और कई ऊमर (गूलर) के हैं। और कहां तक वृक्षों के नाम गिनाऊं?

Nijanand App

इत केतेक बन में हिंडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख।
लिबोई घाट इत आए मिल्या, सो सोभा क्यों कहूं या मुख।। ६२ ।।

इस ताड़वन के बीच में बड़े हिंडोले दस भोम तथा प्रत्येक भोम के प्रत्येक बगीचे में (१८००) हिंडोले हैं। यहां पर रूहें झूलने का सुख लेती हैं। इस ताड़वन से लगकर पूरब की दिशा में नीबू का घाट आया है। उसकी शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

हिंडोले इन बन के, ए बन बड़ा विस्तार।
इन आगूं घाट केल का, और बड़ा बन तिन पार।। ६३ ।।

ताड़वन के हिंडोले और वन का बड़ा विस्तार है। इसके आगे केल का घाट है और उसके आगे बड़े वन की शोभा है।

अब जो बन है केल का, सो आगूं पोहोंच्या जाए।
तिन परे बन पहाड़ का, सब दोरी बंध सोभाए।। ६४ ।।

केले का जो वन है, वह सबसे आगे पुल तक शोभा देता है। उसके आगे मधुवन और महावन के वृक्ष एक सीध में शोभा देते हैं जो पुखराज पहाड़ को घेरकर आए हैं।

बन बड़ा पुखराज का, कई मोहोल बड़े अतंत।
तिन परे बड़े बन की, जुबां कहा करसी सिफत।। ६५ ।।

पुखराज पहाड़ में कई महल हैं जिनके ऊपर बड़े वन की छाया है। इसकी शोभा का यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

जाए मिल्या बन नूर के, नूर परे कहूं क्यों कर।
जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर।। ६६ ।।

यह महावन अक्षरधाम तक जाता है। अक्षर के आगे की शोभा कैसे बताएं? जहां भी नजर दौड़ाएं, सब जगह बेशुमार शोभा है।

अब कहूं आगूं अर्स के, और जोए किनार।
बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार।। ६७ ।।

अब रंग महल के आगे तथा जमुनाजी के किनारे की शोभा का वर्णन करती हूं। जहां पर अक्षरधाम की तरफ भी वन, महल और घाटों के किनारे की शोभा आई है।

दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात।
पांच पांच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चांदनी छात।। ६८ ।।

जमुनाजी के ऊपर दो पुलों की सुन्दर शोभा है। जिनकी पांच-पांच भोमें और छठी चांदनी है।

ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग।
जोत कही न जाए एक तिनका, ए तो मोहोल अर्स के नंग।। ६९ ।।

इन पुलों के झरोखे आमने-सामने शोभा देते हैं। इनके नगों की ज्योति कैसे कहें जबकि परमधाम के एक तिनके की भी शोभा नहीं कही जा सकती।

Nijanand App

तले चलता पानी जोए का, दस घड़नाले जल।
नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल।।७० ।।

पुलों के नीचे जमुनाजी का जल दस घड़नालों में निकलता है। दसों नहरें जल में एक सीध में चली जाती हैं।

चार चौकी बन माफक, छात पांचमी ऊपर किनार।
ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार।।७१ ।।

जमुनाजी की पाल पर बड़े वन के जो पांच पेड़ हैं उनकी चार चौकियां बनती हैं। इनकी पांचवीं भोम के ऊपर के किनारे दोनों पुलों की छत से लगते हैं जिनकी शोभा बेशुमार है।

जोए ऊपर बन झरोखे, सो निपट सोभा है ए।
फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन नंग जे।।७२ ।।

जमुनाजी की पाल के ऊपर बड़े वन के पेड़ों की डालियों से बने झरोखों की शोभा बेशुमार है। इन वनों के फल-फूल और पत्ते जल के ऊपर तोरण (बन्दनवार) जैसी शोभा देते हैं।

साम सामी दोऊ किनारे, तरफ दोऊ बराबर।
दो बन की दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुन्दर।।७३ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारों पर इस तरह दो वन की तथा दो जवेरों की, पुल महलों की चारों की अत्यन्त शोभा है।

इन पुल दोऊ के बीच में, बीच बने सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच बनी चांदनी पाट।।७४ ।।

इन दोनों पुलों के बीच सात घाट अति सुन्दर शोभा देते हैं। तीन दाईं तरफ, तीन बाईं तरफ और बीच में अमृत वन में पाट घाट चांदनी के समान शोभायमान है।

ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत।
ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अर्स सिफत।।७५ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सात घाटों का विवरण सुनना इसकी शोभा बेशुमार है। मैं थोड़ा सा ही बयान करती हूं।

बनके मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छात।
छात दूजी घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात।।७६ ।।

पाल के ऊपर पुल महलों से चलकर देखो तो ऊपर सब पर एक छत शोभा देती है। वन की दूसरी भोम के ऊपर पशु-पक्षी वन के महलों में रहते हैं।

ए जो पसु पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत।
बोल खेल सोभा सुन्दर, सो इन मोहोलों बसत।।७७ ।।

जो पशु-पक्षी पास रहते हैं वह श्री राजश्यामाजी के खिलौनों के समान हैं। उनकी बोली तथा खेल सब सुन्दर लगते हैं। ऐसे पशु-पक्षी इन वन के महलों में रहते हैं।

Nijanand App

रात दिन गूंजे अर्स में, हक की करें जिकर।
क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुन्दर।।७८ ।।

रात-दिन इन पशु-पक्षियों की आवाज धनी के गुणगान में ही गूंजती रहती है। इनके तनों के ऊपर बने चित्रों की शोभा बहुत सुन्दर है।

बानी सुनें तें सुख उपजे, और देखें सुख अपार।
या पसु या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार।।७९ ।।

उनकी बोली सुनकर तथा तन की शोभा देखकर बहुत सुख मिलता है, पशु हो या जानवर, सबकी शोभा बेशुमार है।

तीन घाट आगूं अर्स के, जांबू अमृत अनार।
सो अनार पोहोंच्या अर्स को, दो दोऊ भर किनार।।८० ।।

रंग महल के सामने जांबू (जामुन) अमृत (आम) और अनार के तीन घाट हैं। इनमें अनार और जांबू दोनों के पच्छिमी किनारे रंग महल की दीवार के सांथ लगते हैं।

घाट तीन हांस पचास लों, बीच बड़े दरबार।
दो घाट लगे दोऊ हिंडोलों, दो घाट हिंडोलों पार।।८१ ।।

यह तीन घाट रंग महल के सामने पचास हांस में आए हैं। नारंगी और नीबू के घाट बट-पीपल की चौकी तथा ताड़वन के हिंडोलों से लगते हैं। बाकी के दो घाट (बट और केल के) इन दोनों के आगे हैं।

ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगूं चबूतर।
चौक चौड़ा हिस्से तीसरे, इत दीदार होत जानवर।।८२ ।।

बीच में अमृत वन में पाट घाट है जिसका चबूतरा रंग महल के ठीक सामने आया है। चांदनी चौक अमृत वन के तीसरे भाग में (१६६ मन्दिर लम्बा-चौड़ा) आया है। यहां पशु-पक्षियों का मुजरा होता है।

ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत।
छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत।।८३ ।।

इस चांदनी चौक के बीच दो सुन्दर चबूतरे हैं, जिन पर हरा व लाल वृक्ष हैं। वृक्षों की छाया चबूतरों की लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार फैली है, जिसकी बेशुमार शोभा है।

लंबा चौड़ा चारों हांसों, बराबर दोरी बंध।
अनेक रंग बन इतका, सोभित अनेक सनंध।।८४ ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में यह दोनों चबूतरे चारों तरफ लम्बे-चौड़े एक समान हैं और एक सीध में है। अमृत वन में अनेक रंग शोभा देते हैं।

बन गिरदवाए अर्स के, देख आए आगूं द्वार।
केहे ना सकों हिस्सा कोटमा, अर्स बन कह्या अपार।।८५ ।।

रंग महल के चारों तरफ के वनों की शोभा देखकर धाम दरवाजे में आए। उसकी शोभा के करोड़वें हिस्से का भी बयान नहीं हो सकता। रंग महल के सामने इन वनों की शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

बन में फिर के देखिया, अर्स अजीम के गिरदवाए।
एकल छाया बन की, तले जिमी जोत कही न जाए।।८६।।

रंग महल के चारों तरफ वनों में घूमकर देखा सबकी एक समान छाया है और उनके नीचे की जमीन की ज्योति कहने में नहीं आती।

बन छाया दीवाल लग, झूमत झरोखों पर।
ठाढ़े होए के देखिए, आवत चांदनी लो नजर।।८७।।

वनों की छाया और डालें रंग महल के झरोखों पर आकर लगती हैं और खड़े होकर देखें तो ऊपर चांदनी तक दिखाई देती हैं।

फिरती गिरदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे।
गिरदवाए विचारी गिनती, छे हजार हर हार के।।८८।।

चांदनी के चारों तरफ घूमकर देखें तो नौ भोम के सुन्दर झरोखे दिखाई देते हैं। गिनकर देखें तो प्रत्येक भोम में ६००० (छः हजार) की हार है।

एही आतम को पूछ के, नवों भोम करो विचार।
ले भोम से लग चांदनी, ए भी हारें छे हजार।।८९।।

अपनी आत्मा से पूछकर देखो। हे सुन्दरसाथजी! नौ भोम की शोभा को विचारो। यह पहली भोम से चांदनी तक छः-छः हजार मन्दिर की दो हारें आई हैं।

हर हार चढ़ती नव नव, छे हजार फिरती हर हार।
जमा भए नव भोम के, अर्ध लाख चार हजार।।९०।।

हर एक हार में छः हजार मन्दिर आते हैं और एक मन्दिर के ऊपर नौ भोमों के चौवन हजार मन्दिर आए हैं।

झरोखे कई विध के, गिनती होए क्यों कर।
कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर।।९१।।

झरोखे कई तरह के हैं। इनकी गिनती कैसे करें? कहीं अलग-अलग हैं, कहीं इकट्ठे हैं, इनका दिल में विचार करो।

ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसें तीस तीस।
कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस।।९२।।

दिल में सीधा विचार करें तो एक हांस में तीस झरोखे आते हैं। ऊपर नौवीं भोम है। एक-एक झरोंखा तीस-तीस मन्दिर का है। सामने के हांस में दस मन्दिरों का एक झरोखा आया है और खड़ोकली में पूरब की हांस में बीस झरोखे दिखाई देते हैं।

गिरदवाए कठेड़ा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबांन।
अर्स एकै जवेर का, एकै बिध रंग रस जान।।९३।।

चांदनी पर घेरकर कठेड़ा आया है। पूरा रंग महल एक लाल जवेर का बना दिखाई देता है जिसकी शोभा यहां की जबान से कैसे बताएं?

Nijanand App

कई विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कई ठौर।
चारों तरफों अर्स के, देखी एक पे एक और।। ९४ ।।

यहां कई तरह की बैठक बनी हैं। कई तरह के ठिकाने हैं। रंग महल के चारों तरफ एक से एक अच्छी शोभा है।

हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार।
ए झरोखे कंगूरे, बैठक बारे हजार।। ९५ ।।

चांदनी पर साठ गुमटियों की घेरकर एक हार आई है जिसमें झरोखे, कंगूरे तथा बारह हजार बैठने की जगह बनी हैं।

दो सौ खांचों ऊपर, सोभें नगीने सौ दोए।
बुजरक बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए।। ९६ ।।

दो सौ हांसों पर दो सौ बड़े गुर्ज आए हैं। उनके बीच में ही यह बारह हजार गुमटियां आई हैं जिनकी खूबी कहने में नहीं आती।

ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर।
इन विध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर।। ९७ ।।

यह जो दो सौ एक बड़े गुम्मट आए हैं, इनके ऊपर कलश लगे हैं। इनकी इतनी सुन्दर झलझलाहट है जो जबान से कही नहीं जाती।

और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगूरे बारे हजार।
ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार।। ९८ ।।

बारह हजार गुमटियों के ऊपर बारह हजार कलश कंगूरे के समान शोभा देते हैं। इनका तेज झलक रहा है जिसकी शोभा कहने से बाहर है।

कलसों पर जो बेरखे, सो क्यों कहूं रोसन नूर।
ए जो बनी बराबर गिरदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर।। ९९ ।।

कलशों पर पताका (झंडे) लगे हैं। उनकी शोभा बेशुमार है। यह चारों तरफ की बनी शोभा आसमान में जगमग कर रही है।

केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के माहें।
और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोंचत नाहें।। १०० ।।

इस मुख से जितना भी कहा जाए वह सब माया के शब्दों में है। श्री राजजी महाराज का हुकम इस तरह से कहता है कि परमधाम की महिमा का वर्णन यहां से नहीं हो सकता। यह बेशुमार है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए छोड़िए नहीं एक दम।
अब कहूं अंदर अर्स की, जो दिए निसान खसम।। १०१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! एक क्षण के लिए भी इस सुख को मत छोड़ो। अब धाम धनी ने जो पहचान रंग महल के अन्दर की बताई है, उसका मैं वर्णन करती हूं।

।। प्रकरण ।। ३० ।। चौपाई ।। १५३८ ।।

Nijanand App